© UNIVERSAL RESEARCH REPORTS | REFEREED | PEER REVIEWED
ISSN : 2348 - 5612 | Volume : 10 , Issue : 01 | January - March 2023

गोविन्द मिश्र के उपन्यासों में समाज एवं संस्कृति का स्वरूप

[1]सोनिया सांगवान [2]डॉ. कविता चौधरी

[1]शोधार्थी [2]पर्यवेक्षक

हिन्दी विभाग, औम स्ट्रिलिंग ग्लोबल विश्वविद्यालय, हिसार

सार

गोविन्द मिश्र हिंदी के श्रेष्ठतम कथाकारों में से एक हैं। उन्होंने अब तक बारह उपन्यास, बारह कहानी संग्रह एवं यात्रावृत्तांत, निबंध एवं कविताओं का लेखन कार्य किया है। उनके महत्त्वपूर्ण उपन्यासों में वह अपना चेहरा, धूल पौधों पर, लाल पीली जमीन, पांच आंगनों वाला घर, तुम्हारी रोशनी में, फूल इमारतें और बंदर, धीर समीर, कोहरे में कैद रंग आदि हैं। भोपाल में रहकर वे अनवरत हिंदी साहित्य की सेवा में संलग्न हैं। गोविन्द मिश्र हिंदी के चर्चित कथाकार माने जाते हैं, आपको साहित्य अकादमी एवं सरस्वती सम्मान से सम्मानित किया गया है। उनके उपन्यासों में शिक्षा व्यवस्था के वर्तमान स्वरूप की आलोचना की गयी है।

मुख्य शब्द : शिक्षा, समाज, संस्कृति, स्वरूप, उपन्यास इत्यादि।

प्रस्तावना

गोविन्द मिश्र के उपन्यासों में शिक्षा व्यवस्था पर पर्याप्त प्रकाश डाला गया है। शिक्षा मूल्यों की संवाहिका होती है। आज के समय में शिक्षा का बाजारीकरण तेजी से हुआ है। बाजारीकरण के कारण जिन नैतिक मूल्यों की शिक्षा दी जाती थी, वह गायब हो गयी है। 'शाम की झिलमिल' उपन्यास में गोविन्द मिश्र ने इस सवाल को रेखांकित करते हुए लिखा है "मैं जनता हूँ कि मैं बुद्धिमान नहीं पर उस वक्त का आदमी हूँ जब आदमी की नस्ल आज से बेहतर थी। क्योंकि हमारी पढ़ाई बेहतर थी। आज कहाँ हैं पहले जैसे नेता, डॉक्टर, अध्यापक, अफसर कोई भी। हर चीज में गिरावट क्यों हैं-साहित्य, सिनेमा, शिक्षा, संगीत कुछ उठा लीजिये। आज जो हैं उन्हें सामने जो दिखाई देता है, वे उसी से चालित होते हैं, कुछ और सोचने का बूता नहीं, इंटरनेट पर टिके, कल्पनाशीलता से शून्य, सूचनाओं से बजबज नौंनसिकल।" गोविन्द मिश्र के कई उपन्यासों में प्राइमरी शिक्षा व्यवस्था से लेकर उच्चशिक्षा व्यवस्था तक की आलोचना की गयी है।

समाज बहुत कुछ धर्माधारित हुआ करता है। अनेक प्रकार की जातियों एवं समाजों के आपसी मेल-मिलाप के प्रभाव से एक नए तरह का समाज और नई तरह की संस्कृति विकसित होती है। व्यक्ति का सम्बन्ध अपने समाज से होता है। जिस समूह में व्यक्ति पला-बढ़ा होता है उस समाज और संस्कृति से उसका जुड़ाव हुआ करता है। भारतीय समाज और यहाँ पर गठित

विभिन्न समाजों के बारे में 'भारतीय समाजः संरचना और परिवर्तन' नामक ग्रन्थ में ए. एल. दोषी, पी. सी. जैन ने समाज को परिभाषित करते हुए लिखा है - "समाज और कुछ न होकर अन्तःक्रियाओं की एक व्यवस्था है। भारतीय समाज की अपनी एक विशिष्टता रही है अपनी इस विशिष्ट व्यवस्था की अन्तः क्रिया बाहरी परम्पराओं की व्यवस्थाओं के साथ हुई है, यह भारत आतंरिक और बाहरी व्यवस्थाओं की अन्तःक्रिया का परिणाम है।"

मध्यवर्गीय समाज का स्वरूप-

गोविन्द मिश्र के उपन्यासों में भारतीय मध्यवर्ग की तस्वीर स्पष्ट देखी जा सकती है। 'पाँच आंगनों वाला घर' में भारतीय शहरी मध्यवर्ग के स्वरूप का निरूपण किया गया है। मुंशी राधेलाल का घर समग्र भारत का प्रतीक है, यह घर आजादी के लिए तन-मन से समर्पित दिखाया गया है। पाँच आंगनों वाले इस बड़े से घर में भारत की पूरी विशेषता प्रकट हो गयी है "एक घर में फैला पूरे का पूरा संसार। जोगेश्वरी के चारों के चारों लड़के उसी घर में रहते थे। सबसे बड़े मुंशी राधेलाल वकील, जिनके राजन समेत तीन लड़के और एक लड़की। दूसरे नंबर पर घनश्याम जिनकी पत्नी घर में रामनगर वाली कहाती थीं। तीसरी बांके जिनकी पत्नी शिवपुरी वाली। चौथे सन्नी अविवाहित।"

गोविन्द मिश्र के उपन्यासों में इसी सामंती मानसिकता से युक्त समाज और उसमें संघर्षरत स्त्री की व्यथा-कथा है। मध्यवर्गीय परिवार अभी भी सामंती प्रवृत्ति का शिकार है, वह रूढ़ियों, परंपराओं एवं अंधविश्वासों से ग्रस्त है। भारतीय समाज स्त्रियों के प्रति अभी भी पिछड़ी हुई गुलाम मानसिकता का बोलबाला है। गोविन्द मिश्र ने अपने उपन्यासों के माध्यम से मध्यवर्गीय समाज के तानेबाने को सामने लाया है।

ग्रामीण मध्यवर्ग-

"प्रत्येक सामाजिक घटना (चीमदवउमदवद) की भाँति ग्राम भी एक ऐतिहासिक समूह है। मानव जीवन के विकास की किसी स्थिति विशेष में ग्राम का उद्भव होना, मानव इतिहास के परवर्तीकाल में उसका आगे प्रवर्धन तथा विकास होना, इसके सहस्त्रों वर्षों के जीवन में विभिन्न प्रकार के संरचनात्मक परिवर्तन का अनुभव होना, औद्योगिक क्रांति से लेकर अब तक के पिछले डेढ़ सौ वर्षों में उसमें द्रुतगति से मौलिक परिवर्तन होना", ही ग्रामीण मध्यवर्ग के उद्भव का कारण रहा है।कोहरे में कैद रंग' उपन्यास में अति-पिछड़े माने जाने वाले बुंदेलखंड के गाँवों का समाज चित्रित किया गया है 'मैं' (प्रमुख पात्र) का परिवार बेहद परंपरावादी है साथ ही अतिशय गरीबी और अशिक्षा व्याप्त होने के कारण उनका परिवेश वहाँ की चट्टान की तरह स्थिर है -

"भूख! वह बुनियादी चिंता है जो दादा से चलकर पिता तक आयी थी, दोनों ने जीवन में भूख देखी थी इसलिए। चाहे गाँव का वह रसखीर वाला दिन हो या बोर्डिंग हाउस में भेजने वाला दिन, भूख का इन्तजाम करके ही पिता मेरे लिए अपना स्नेह दिखाते थे।"

पारिवारिक व्यवस्था-

परिवार, समाज की लघु इकाई है। परिवार व्यवस्था का निर्माण सामाजिक व्यवस्था को सुचारू रूप से चलाने हेतु किया गया है। जेपी सिंह अपनी पुस्तक 'समाजशास्त्रः अवधारणाएँ एवं सिद्धांत' में लिखते हैं - "यौन व्यवहार को नियंत्रित करने और बच्चों को सुरक्षा तथा सामाजिक शिक्षा प्रदान करने की मानवीय आवश्यकताओं के लिए परिवार का सृजन हुआ। परिवार सभी सामाजिक समूहों में सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण और व्यापक समूह है। भारत में परिवार जैसे समूह के अभाव में समाज की कल्पना नहीं की जा सकती।"

गोविन्द मिश्र के लगभग सारे उपन्यासों में परिवारों में आये टूटन एवं मूल्य संक्रमण को चित्रित किया गया है। बेहद पिछड़े माने जाते हुए गावों में परिवार का व्यक्ति के जीवन में अहम् योगदान होता है। 'कोहरे में कैद रंग' उपन्यास में नैरेटर का पालन-पोषण परिवार में होता है, परिवार उसे जीवन के संघर्षों से लड़ना सिखाता है। 'मैं' के पिता के पिता का बड़ा सा परिवार है। गरीबी और अशिक्षा में भी प्रेम की डोर बंधी होती है, पिता के प्रति उनके परिवार का लगाव शुद्ध पारिवारिक लगाव है, जहाँ पुत्र के लिए पिता के मन में अगाध प्रेम है। उसकी हर छोटी से बड़ी समस्याओं के लिए सारा परिवार संबल बन कर खड़ा मिलता है। 'पाँच आँगनों वाला घर' संयुक्त परिवार का बहुत बड़ा उदाहरण है। इसी तरह 'लाल पीली जमीन' उपन्यास में पारिवारिक व्यवस्था का चित्रण किया गया है।

वैवाहिक व्यवस्था-

विवाह, सामाजिक व्यवस्था को नया स्वरूप देता है। भारतीय समाज परम्परागत विवाह पद्धति में विश्वास करता है। इस पद्धति में बिना स्त्री-पुरुष को जाने समझे एक दूसरे के सुपुर्द कर दिया जाता है। जिससे आने वाले समय में स्त्री अपनी जिन्दगी दूसरे के रहम-ओ-करम पर छोड़ देती है। गोविन्द मिश्र ने 'कोहरे में कैद रंग' उपन्यास में भारतीय विवाह पद्धति की आलोचना भी की है, उनके अनुसार "कितने जीवन बिगड़ते हैं इससे। साम, दाम, दंड, भेद सबका इस्तेमाल होगा। निकलोगे कैसे, ब्याह नहीं व्यूह है, हमारा रचा हुआ।" गोविन्द मिश्र ने अनमेल विवाह और उसके दुष्परिणामों की ओर भी संकेत किया है, उनके अनुसार ऐसे जीवन में जब पति-पत्नी का वैचारिक अन्तराल होता तब अवैध संबंधों की स्थिति बनी रहेगी, "मुझे लगता है कि जब तक

विवाह नाम की संस्था है, विवाहेतर सम्बन्ध होंगे ही। वैवाहिक जीवन ठीक-ठाक चलता रहे, इसके लिए भी वे जरूरी हैं।" यह समाज की सच्चाई के रूप में सामने आती है।

संस्कृति का स्वरूप-

संस्कृति का अर्थ व्यापक तौर पर यह लगाया जा सकता है कि व्यक्ति एवं समूह की गतिविधियों को धर्म एवं नैतिकता सम्मत कार्य सम्पादन का हेतु है। गोविन्द मिश्र 'तुम्हारी रोशनी में' उपन्यास में लिखते हैं - "साइंस का उलटा जो कुछ है, वह कल्चर है।" संस्कृति का पूरा आशय मनुष्य की संवेदनात्मक लगाव से होता है, संस्कृतियाँ समाजों के भीतर पाए जाने वाले उस बिंदु को स्पर्श करने का कार्य करती हैं, जिससे सामाजिक जुड़ाव बना रहे। प्रेमचंद के शब्दों में - "मानव संस्कृति का विकास ही इसीलिये हुआ है कि मनुष्य अपने को समझे।"सच्चिदानंद सिन्हा के शब्दों में कहा जाय तो "संस्कृतियों की संरचना का तानाबाना भी मनुष्यों के पारस्परिक सम्प्रेषण पर पूरी तरह निर्भर है, और अगर संप्रेषण बाधित हो जाय तो इसका अस्तित्व भी खतरे में पड़ जाएगा।"

रिश्तों में दिनों दिन बाजार हावी होता जा रहा है गाँवों-घरों से दूर बैठा व्यक्ति आज अपने संबंधों से परे हो गया है वह त्यौहार, संस्कार या रिश्ते-नातों को भूलता जा रहा है। इसका असर भी संस्कृति पर पड़ता है, धीरे-धीरे उसकी प्रकृति किसी नयी तरह की जीवन शैली की ओर बढ़ती जाती है वही आगे चलकर एक नई संस्कृति का निर्माण करती है जिसमें सब कुछ होते हुए भी प्राणतत्व नहीं पाया जाता।

धर्म-

धर्म को परिभाषित करते हुए अरुण माहेश्वरी ने मार्क्स को याद किया है, उन्होंने लिखा है "धर्म उत्पीड़ित प्राणी की आह, ह्रदय विहीन विश्व का ह्रदय, आत्मविहीन परिवेश की आत्मा है। यह जनता की अफीम है।" 'धीरसमीरे' उपन्यास में सुनंदा के माध्यम से गोविन्द मिश्र ने ईश्वर की सत्ता को नकार दिया है। "गलत हैं वे लोग जो कहते हैं कि ईश्वर होता है।। होता तो संसार संचालन में न्याय साफ-साफ दिखाई देता। और वे तो निरे अंधविश्वासी हैं जो कहते हैं कि ईश्वर का रूप करुणामय है।" उन्होंने 'धीरसमीरे' उपन्यास में इसी अफीम को केंद्र में रखा है। धर्म के इस संस्थान में स्त्रियों का शोषण भी अनेक विधि से होता है। बलात्कार, हत्या, चोरी, छिनैती, लूटपाट, गुंडागर्दी का खुला मंच धार्मिक अड्डे बन गए गोविन्द मिश्र ने लिखा है "कुछ दिनों पहले ही खबर उड़ी थी कि एक गुजराती सेठानी को पंडे घाट के किसी तहखाने में ले गये। बलात्कार के बाद

उसका सारा जेवर पार कर दिया। यही नहीं उसके बाद बेचारी की जीवन से भी छुट्टी कर दी। सेठ ने पुलिस को खबर दी और कई पंडे गिरफ्तार हुए थे।"

रीति-रिवाज-

गोविन्द मिश्र के उपन्यासों में व्यक्त रीति-रिवाजों पर दृष्टिपात किया जाय तो यह तथ्य सामने आते हैं, उनके उपन्यास 'हुजूर दरबार' में सामंती जीवन शैली या रीति का प्रभाव मुख्यतया है। उनकी जीवन शैली में आधुनिक अंग्रेजी जीवन शैली का प्रभाव भी दृष्टिगोचर होता है। महाराज रुद्रप्रताप की जीवन शैली सामान्य जन की अपेक्षा जुदा है, मंत्री-सामंत एवं सैनिकों की जीवन शैलियाँ भिन्न हैं। उनके आचार-विचार, रहन-सहन में भी पर्याप्त भिन्नता है। इन सब के बावजूद परम्पराएँ एक हैं, रिवाज एक हैं। देवपूजन का रिवाज यदि राजघरानों में है तो सामान्य जन भी देव पूजन करता है। स्वास्तिक का प्रचलन, ज्योतिष का प्रभाव, शकुन-अपशकुन आदि राजा से लेकर प्रजा तक में प्रचलित हैं। रूढ़ियों और परंपराओं का निर्वहण राजा हो या रंक दोनों जगह समान रूप से पाया जाता है।

पर्व एवं त्यौहार-

गोविन्द मिश्र के उपन्यासों में मेले एवं त्योहारों का उल्लेख कई जगह हुआ है। 'पाँच आंगनों वाला घर' में मेले, त्योहारों आदि का बखूबी चित्रण मिलता है। जोगेश्वरी का घराना साहित्य, संगीत, कला का कद्रदान है। वकीली के पेशे के साथ जोगेश्वरी के पुत्र मुंशी राधेलाल इन शौकों को भी पालते हैं, उनके यहाँ बनारस की कोठे और मुजरेवालियों की भी कद्र की जाती है। इस रचना में सन्नी के माध्यम से प्रयाग कुम्भ मेले का वर्णन भी किया गया है। दुनिया का सबसे बड़ा मेला प्रयाग में लगता है, हर बारवें वर्ष में महाकुम्भ का आयोजन किया जाता है। सन्नी घर से जब भागे तब उन्होंने साधुओं की मंडली का पीछा किया और प्रयाग के कुम्भ में जा पहुँचे।

खान-पान एवं वेशभूषा-

उपन्यासों में अभिव्यक्त समाज और उसकी बनावट के बारे में यथार्थवादी नजरिये का प्रयोग करते हुए गोविन्द मिश्र ने गरीबी, भुखमरी, अमीरी का वर्णन किया है। 'कोहरे में कैद रंग' जैसे उपन्यास में 'मैं' के परिवार की आर्थिक तंगी एवं जीवन में आने वाले बदलाव का वर्णन करते हैं। मुल्लूमामा एवं अजब, भैयाबाई एवं टाईप बाबू दोनों को आमने-सामने रखकर गरीबी-अमीरी, भुखमरी और मस्ती का उल्लेख किया गया है। 'मैं' के पिता के सम्मुख जीविका चलाने के लिए कोई साधन न होने के कारण प्राइमरी अध्यापक से लेकर पकौडे लगाने तक का संघर्ष करते दिखाया गया है।

निष्कर्ष

यह कहा जा सकता है कि गोविन्द मिश्र के लेखन में समय के साथ समस्याओं को नए कलेवर में रखने का हुनर प्राप्त है। समाज और संस्कृति उनके उपन्यासों में प्रमुख स्थान पाते हैं, आशावादी गोविन्द मिश्र अपने समाज और उसमें घटित होने वाली हर परिस्थिति का सूक्ष्म अंकन करने की क्षमता रखते हैं, उनके कई सारे उपन्यासों में स्त्री जीवन, गरीबी-भुखमरी, ऊँच-नीच के भेदभाव के साथ परम्परा के प्रति लगाव, संस्कृति और धर्म के प्रति यथार्थवादी मानवीय सोच आदि का समिश्रण विद्यमान है। उपन्यासों में जैसे की अपने समय की आलोचना होती है, उसी तरह की ईमानदारी गोविन्द मिश्र ने अपने लेखन में दिखाई है। शिक्षा व्यवस्था पर गोविन्द मिश्र ने बहुत ही तल्ख़ टिप्पणियाँ की हैं। जो आज के समय में बेहद प्रासंगिक हो जाती हैं। जब तक शिक्षा व्यवस्था में समरूपता नहीं आयेगी तब तक वंचित तबके के बच्चों का शोषण ऐसे ही जारी रहेगा भारत की शिक्षा व्यवस्था दोयम दर्जे की हो गयी है, इसके सबसे बड़े जिम्मेदार यहाँ के शिक्षा माफिया हैं। यहाँ के राजनीतिज्ञ हैं, जो लुटेरे बनकर शिक्षा का व्यवसाय कर रहे हैं। भारत में हालात यह हो गयी है कि नामांकन विद्यालय में और शिक्षा कोचिंग सस्थाओं में, फिर ऐसी क्या बाध्यता है कि शिक्षा के लिए नामांकन विद्यालयों में हों उसे भी कोचिंग संथाओं के हवाले कर देना चाहिए, दूसरी बड़ी बात आज की शिक्षा व्यवस्था में देखी जा रही है कि प्राइवेट विश्वविद्यालयों को खोलने की मान्यता सरकारें दे दिया करती हैं, जहाँ पर वचिंत तबकों से आने वाले बच्चे कभी भी प्रवेश नहीं पा सकते इन विश्वविद्यालयों में डिग्रियाँ मात्र खरीदी जाती हैं, गुणवत्ता नहीं प्राइवेट संस्थाओं का अर्थ ही है गुण हीनता का तकाज़ा।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

भारतीय समाजः संरचना एवं परिवर्तन, एस. एल. दोषी, पी. सी. जैन, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, संस्करण 2007, पृष्ठ संख्या-5

पाँच आँगनों वाला घरः गोविन्द मिश्र, राधाकृष्ण प्रकाशन- नई दिल्ली, दूसरा संस्करण 2008 पृष्ठ संख्या 7

पाँच आंगनों वाला घरः गोविन्द मिश्र, पृष्ठ संख्या 21

कोहरे में कैद रंगः गोविन्द मिश्र, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2004, पृष्ठ संख्या 28

भारत नेहरू के बाद : रामचंद्र गुहा, अनुवादक सुशांत झा, पेन्गुई रेंडम हाउस इण्डिया, गुड़गाँव-हरियाणा. संस्करण 2012, पृष्ठ संख्या-273-274

पाँच आँगनों वाला घरः गोविन्द मिश्र, पृष्ठ संख्या-51

आदमी की निगाह में औरतःराजेन्द्र यादव, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, चैथा संस्करण 2015, पृष्ठ संख्या 22

भारतीय ग्रामीण समाजशास्त्रः ए. आर. देसाई, अनुवादक- हरिकृष्ण रावत, रावत पब्लिकेशंस-हैदराबाद, पुनर्मुद्रित संस्करण 2012, पृष्ठ संख्या-37

कोहरे में कैद रंगः गोविन्द मिश्र, पृष्ठ संख्या 27

शाम की झिलमिल : गोविन्द मिश्र, किताबघर प्रकाशन-नई दिल्ली, प्रथम संस्करण- 2017, पृष्ठ संख्या-10